॥ ॐ नमः शिवाय ॥

नोट—मन्त्र लिखना बराबर चालू रहेगा।

श्रीकाशीस्थ ॐ नमः शिवाय बैंक की तरफसे

हरिद्वारके कुम्भमें



श्री गंगाजी की डेढ़ करोड़ बत्तीसे

अपूर्व आरती

तथा

'महारुद्र यज्ञ'

प्रकाशक—ब्रह्मचारी चैतन्यानन्द भूतपूर्व
पं० धर्मदत्त शर्मा।
मैनेजर-ॐ नमः शिवाय बैंक,
टेढ़ीनीम गोविन्द मठ काशी।

सम्वत् १९९५

मूल्य

ॐ नमः शिवाय मन्त्र का १००० जप

काशीस्थ ॐ नमः शिवाय बैंक (मन्त्रकोष) की तरफसे

हरिद्वारके कुंभ पर जगत कल्याणार्थ

डेढ़ करोड़ बत्तीमे श्रीगङ्गाजीकी आरति

तथा

महारुद्र यज्ञ व मंत्रों का विराट पूजन ॥

दीपज्योति स्तुतिः ।

ॐ दीपोज्योतिः परं ब्रह्म दीपोज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपोहरतुमेपापं सन्ध्या दीप नमोऽस्तुते ॥
शुभंकरोतु कल्याणमारोग्यं सुखसम्पदम् ।
विद्याबुद्धिविवृद्धिं च दीप ज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥
मार्त्तण्ड मण्डलाखण्ड चन्द्र बिंबाग्नितेजसाम् ।
निधानंदेवदीपोऽयं निर्मितस्तव भक्तितः ॥

स्कन्धपुराणे ।

श्रीस्कन्दपुराणे-कोटिदीप महोत्सव ।

एवं यः कुरुते मर्त्यः कोटि दीप प्रदीपनम् ।
नरो वाप्यथवानारी सोऽश्नुते पद मव्ययम् ॥ १ ॥
ज्ञानमुत्पद्यते तस्य संसार भय नाशनम् ।
बाल्येवयसि यत्पापं यौवनेवापि यत्कृतम ॥ २ ॥

सनत्कुमार संहितायां ।

दीपान्दद्याद्बहु विधान वसन्ते जान्हवीतटे ।
यत्र यत्र च दीपान्सा पश्यत्यग्नि समुद्भवा ॥ ३ ॥
तत्र तत्र रतिं कुर्यान्नांधकारे कदाचन ।
तस्माद्दीपः स्थापनीयः चैत्रे भक्तिप्रियैः जनैः ॥ ४ ॥
मेष संक्रान्ति राकायां सर्वे देवाः प्रतुष्टुवुः ।
तस्मिन्दिने सर्वदेवै र्दीपा दत्ता हरायच ॥ ५ ॥
सर्वथैव प्रदेयाश्च दीपास्तु हर तुष्टये ।
कोटिसंख्या मिताः शुद्धाः घृताक्तादीपवर्त्तयः ॥ ६ ॥
ददद्दीपं पौर्णिमायां सर्व पापैः प्रमुच्यते ।
पौर्णिमायां तु सन्ध्यायां कर्तव्य स्त्रिपुरोत्सवः ॥ ७ ॥
पौर्णिमायाममायांतु विष्णुं नीराजयेत्सदा ।
प्रदोष समये राजन्न दारिद्र्यं मवाप्नुयात् ॥ ८ ॥
कीटाः पतंगा मशकाश्च वृक्षा जलेस्थले ये विचरन्ति जीवाः ।
दृष्ट्वा प्रदीपं न च जन्मभागिनो भवन्ति नित्यं श्वपचाहिविप्र ९॥

ॐ नमः शिवाय मंत्र लिखने की महिमा ।

नमः शिवाय ॐ पूर्वं लिखिति यो नरः सदा ।

अघं विनश्यते तस्य वन्हौ काष्टचयोयथा ॥ १ ॥

जैसे प्रदीप्त अग्नि सूखे काष्ठके समुदायको एकदम भस्म कर देती है । इसीप्रकार जो व्यक्ति श्रद्धा भक्ति युक्त प्रणव सहित पंचाक्षरी ॐ नमः शिवाय महामन्त्रको लिखते हैं उनके श्री साम्ब सदाशिवकी असीम कृपासे सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाते हैं ।

अतएव परीहाय प्रमादं लिख्यतां मुदा ।

मन्त्रराजो पराभक्त्या मुच्यतां भवबन्धनात् ॥ २ ॥

अर्थ—इसलिये प्रमाद रूप शत्रुको छोड़कर परा भक्ति पूर्वक प्रसन्न मनसे "ॐ नमः शिवाय" इस मन्त्रराजको लिखो । जिससे संसारके बन्धनोंसे मुक्त हो जावोगे ॥ २ ॥

ॐ नमः शिवायमन्त्रोऽयं सर्वपुमर्थसाधकः ।

लिखितः प्रेम भक्तिभ्यां रक्तमस्याऽस्ति भावुकैः ॥३॥

अर्थ—भावुक सज्जनोंसे प्रेम भक्ति द्वारा लाल स्याहीसे लिखा हुआ "ॐ नमः शिवाय" यह मन्त्र, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, रूप चतुर्विध पुरूषार्थको देता है ॥ ३ ॥

मालया जपनाच्चित्ते ह्यैकाग्र्यं नहि संभवेत् ।

लेखनात्तद्भवत्येव तस्माच्छ्रेष्ठयं तदुच्यते ॥ ४ ॥

अर्थ—साधक पुरूषको नियमतः मालाके द्वारा मन्त्र जपनेसे चित्तमें एकाग्रता नहीं होती है । लिखनेसे एकाग्रता होजाती है इसलिये जपनेकी अपेक्षासे मन्त्रका लिखना अति श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥

त्वर्यताम् सज्जनाः ! विज्ञा ! लोकलज्जां विहाय च ।

लिख्यतां मन्त्रराजोऽयं श्रद्धया मा प्रमाद्यताम् ॥५॥

अर्थ—हे सज्जन बुद्धिमान पुरूषो ? लोक लज्जाको छोड़कर शीघ्रता करो ! यह मन्त्र राजको श्रद्धासे लिखो । प्रमाद न करो ॥ ५ ॥

श्री हरिद्वार कुम्भमें गंगा जी के पवित्र तट पर

काशीस्थ ॐ नमः शिवाय बैंक [मन्त्रकोष]

में अनेक धार्मिक महोत्सव

मन्त्रों का विराट पूजन

[हवनात्मक तथा अभिषेकात्मक महारुद्र यज्ञ]

करीब २०००० बीस हजार समष्टिमें साधु ब्राह्मणादिकोंका

भोजनादिकसे सत्कार

श्रीविश्वनाथजी की आन्तरीय प्रेरणा तथा ब्रह्मनिष्ठ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी जयेन्द्रपुरीजी महाराज महामण्डलेश्वरजीके आशीर्वादसे ॐ नमः शिवाय बैंक (मंत्रकोष) में १७० करोड़ अर्थात एक अरब सत्तर करोड़ ॐ नमः शिवाय. षडाक्षरी, तथा, पंचाक्षरी, नमः शिवाय, व अष्टाक्षरी ॐ महादेवाय नमः, तथा ॐ नमो नारायणाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, राम-राम, शिव-शिव, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। रां रामाय नमः। क्लीं कृष्णाय नमः। राधापुरुषोत्तमाय नमः। गायत्री मन्त्र तथा विष्णु सहस्र नाम के पाठ गीताके सम्पूर्ण श्लोक लिखे हुए ५१ निराहार व्रत ८०० फलाहार व्रत २६१ करोड़ करीब माला द्वारा जप करीब २४०

चित्र हाथसे बनाये हुए शंकर आदि देवताओंके भी जमा हुए हैं। जो कि सिर्फ ॐ नमः शिवाय मन्त्रोंसे लिखकर बनाये गये हैं। विशेष दर्शनीय चित्र एक अहमदाबादसे आया हुवा है, इस चित्रमें चावलोंके ऊपर ॐ नमः शिवाय मन्त्र लिखकर चावलोंका मन्दिर बनाकर बीचमें सदा शिवशंकर भगवान की मूर्ति व नन्दीगण आदि वनाये हुए हैं, यह अद्वितीय चित्र अहमदाबाद की महालक्ष्मी बैनका बनाया हुवा है। हरिद्वार कुम्भके शुभ अवसर पर महारुद्र यज्ञके समय लाहोर ॐ नमः शिवाय वैंक की शाखाके एक सज्जन प्रेमी भक्त श्रीमान् देवीदासजी ४० चित्र शंकरजी गणेशजी, कृष्णजी, नन्दीगण आदिके सुन्दर वढ़िया ॐ नमः शिवाय मन्त्रोंसे लिखे हुए लाये थे, इन चित्रोंको यज्ञशालामें लगाया गया था, जिससे यज्ञशाला की वड़ी शोभा रही, प्रयागके कुम्भमें भी श्रीमान् देवीदासजी की तरफसे ५० के करीब मन्त्र रचित चित्र आये थे। श्री विश्वनाथजी आपको सदैव सद्बुद्धि प्रदान करें। प्रार्थी—व्यवस्थापक।

हरिद्वारके कुम्भमें

जगत् कल्याणाथ ॐ नमः शिवाय वैंकको तरफसे अनेक धार्मिक महोत्सव मनाये गये थे, सबसे प्रधान 'महारुद्र यज्ञ' धर्मप्रेमी-साधुहितैषी-कर्मवीर श्रीमान् वीरूभाई डायाभाई मेहताजी की तरफसे हुआ था-जिसमें काशीजीके प्रसिद्ध याज्ञिक आचार्य श्री पं० रामनाथजी वेदशास्त्री तथा ऋषिकुलके प्रधान वेदाचार्य

ब्रह्मापद पर नियुक्त किये गये थे। यज्ञकी पूर्णाहुतीके समय बड़े-बड़े विद्वान् महात्मा मण्डलेश्वर तथा प्रतिष्ठित सद्गृहस्थ भी उपस्थित थे। ॐ नमः शिवाय लिखित मन्त्रोंका विराट पूजन तथा बादमें समष्टि भण्डारोंमें साधु, सन्त, महात्मा विद्वान्, पण्डित तथा अभ्यागतोंका यथोचित सत्कार किया गया। महारूद्र यज्ञमें अग्नि अरणी काष्ठसे प्रगट की गई थी, और अन्य यज्ञोंमें अग्नि अरणी काष्ठसे प्रगट करनेमें कई घण्टे परिश्रम करनेसे अग्नि प्रगट होती है, लेकिन यहां हरिद्वार जैसा पवित्र स्थल-महात्माओं का आश्रम व श्रीमान् बीरूभाईजी की कर्मनिष्ठा व सात्विक भाव होनेसे पण्डितोंकी वेद ध्वनि द्वारा अग्नि देव चार पांच मिनटमें ही प्रगट होगये थे। यज्ञ काशीके बड़े २ धुरन्धर विद्वान् तथा ऋषिकुलके प्रधान आचार्य व वेद पाठियों द्वारा सानन्द सम्पन्न निर्विघ्नतापूर्वक समाप्त हुआ। यज्ञ मण्डपकी सजावट भी बहुत अच्छी थी। ५ दिन महारूद्र यज्ञ तथा शिवरात्रिसे लेकर चैत्रकी पूर्णिमासी तक लघुरुद्र (अभिषेक, वेदपाठ, हवन) बराबर चालू रहा। सानन्द स्टेटकी राजमाता श्रीमती हीरा बा साहेब की तरफ से शिवरात्रिकेदिन अभिषेकात्मक महारुद्र यज्ञ बड़ी धूमधामसे हुआ।

सहस्र घटाभिषेक

चैत्र कृष्णपक्षमें श्रीमती रूकमणी बैनकी तरफसे तथा चैत्र शुक्लपक्षमें श्रीमान् सदाशिव अम्बालाल देवरणकरजी की तरफसे बड़े समारोहके साथ हुवा। महात्मा तथा सद्गृहस्थ सभीने एक २ घड़ा

लेकर शंकरजी को क्रम क्रमसे चढ़ाना आरम्भ किया। एक तरफ हवन तथा वेदपाठ बेंड बाजे की ध्वनि होती थी चैत्र की अमावास्या तथा चैत्र की पूर्णिमासी को सानन्द स्टेट की मां साहेब हीरा वा जी की तरफसे वसन्त पूजन (चारों वेदों का पाठ) हुवा।

इसीप्रकार श्रीमद्भागवत की सप्ताह काशीपुर की मूंगादेवी की तरफसे हुई। नवरात्री महोत्सव तथा रामनवमी को राम जन्मोत्सव आदि धार्मिक उत्सव बड़े समारोहके साथ मनाये गये।

विशेष सूचना

सर्व मण्डलेश्वर तथा महात्मा मण्डल व काशीके बड़े २ धुरन्धर प्रतिष्ठित विद्वान् बैंक की शाखा वाले तथा अन्य भक्तिशील शुभचिंतक प्रतिष्ठित व्यक्तियोंका यही कहना हुवा है। कि ॐ नमः शिवाय बैंक सदाके लिये स्थायी रूपमें रहना चाहिये। क्योंकि यह पारमार्थिक बैंक जगत का उद्धारक परोपकारक उभय लोक कल्याणकारक है। प्रणव सहित मन्त्र द्विजाती को ही लिखना चाहिये।

ॐ नमः शिवाय बैंक की शाखा हिन्दुस्तानसे अतिरिक्त भी है। एक दूसरेके परिचयसे द्विजाति द्वारा मन्त्र लिखकर आते रहते हैं, अफ्रिकासे विशेष मन्त्र लिखकर आता है ईरान, इंग्लैंड, जर्मन, पेरिस लण्डन, सीलोन, रंगून इन जगहोंमेंसे कभी २ कम संख्यामें आता है, कभी लाख दो लाख इत्यादि।

विश्वनाथ पत्रके सम्पादकजी मण्डलेश्वर बनाये गये

हरिद्वारके कुम्भमें चैत्र शुक्ल द्वितीया समष्टि भण्डाराके दिन सर्व मण्डलेश्वर तथा सर्व महन्त-व-पंचायती श्रीमहानिर्वाणी अखाड़ा आदि समस्त दशनामी महात्माओंकी तरफसे बड़े समारोहके साथ श्री विश्वनाथ पत्रके सम्पादक पूज्य १०८ स्वामी महेश्वरानन्दजी महाराजको कनखल गिरीशानन्दाश्रम स्वामी सूरतगिरिजी महाराजका बंगलाके अधिष्ठाता बनाकर मण्डलेश्वर पद पर नियुक्त किये। सबसे प्रथम मण्डलेश्वर स्वामी श्रीकृष्णानन्द जी महाराजने आपकी योग्यता विद्वत्ता विराट धर्मप्रचार आदि गुणोंका वर्णनकर आपको मण्डलेश्वर बनानेका प्रस्ताव किया—जो सभी महात्माओंने करतल ध्वनिसे बड़े हर्षके साथ स्वीकृत किया, तत्पश्चात् महामण्डलेश्वर स्वामी श्री जयेन्द्रपुरीजी महाराज प्रभृति मण्डलेश्वरोंने आपको गद्दी पर बैठाया, तत्पश्चात् सभी मण्डलेश्वरोंने तथा महन्तोंने अपनी २ तरफसे चद्दरें साल-दुशालें तथा भेटें अर्पण की, दर्शकोंकी अपार भीड़ थी काशीकी प्रतिष्ठित वेद मण्डलीने वेदध्वनि द्वारा राज्याभिषेकके मन्त्रोच्चारण कर अच्छी शोभा बढ़ाई थी। समष्टिकी पंक्तिमें माननीय श्री सम्पादक महोदयजीकी तरफसे अहमदाबादके श्रीमान् वीरूभाई डाह्याभाई महेताजी द्वारा तथा खरांगणके सेठ कन्हैयालालजी द्वारा सर्व महात्मा तथा ब्राह्मण आदि को भोजन वस्त्रसे सत्कार कराया गया। विश्वनाथ पत्र तथा अनेक धार्मिक पुस्तकें भी वितीर्ण की गईं।

हरिद्वारके कुम्भमें विराट आरती

ब्रह्मकुण्ड हरकी पैड़ी पर शिवरात्रीसे चैत्रकी पूर्णिमासी तक काशीस्थ ॐ नमः शिवाय बैंक (मन्त्र कोष) की तरफसे जगत् कल्याणार्थ श्रीगंगाजी की सायंकाल को प्रतिदिन तीन चार लाख फूलबत्ती तथा लम्बी बत्ती मिलाकर आरती की जाती थी। इस अपूर्व आरतीको देखनेके लिये ब्रह्मकुण्ड पर एक घण्टा पहिले ही जनताकी अपार भीड़ लग जाती थी—आरतीके लिये बड़े बड़े दो दीपस्तम्भ तथा १०८ बत्तीकी एक विशाल जर्मन सिलवरकी आरति तथा जलमें छुटनेवाली छोटी छोटी पांच नौकायें जिसमें बत्तियां रख जलाकर रस्सा बांधकर जलमें छोड़ी जाती थीं, हजारों पडिया (दोने) में भी बत्तियां रखकर जलमें प्रवाह की जाती थी—वेदपाठ, जप, पूजन, घंटानादध्वनि तथा लगाने वाले प्रबन्धक २३ आदमी रखे गये थे। गंगासभाके स्वयंसेवक तथा महानन्द मिशनके स्वयंसेवकोंने भी प्रतिदिन आरतीके समय उपस्थित होकर भीड़ हटाकर सेवाका अच्छा लाभ उठाया था। ऐसी अद्वितीय विराट आरति हरिद्वारमें कभी नहीं हुई थी। प्रथम ॐ नमः शिवाय बैंकके कार्यकर्ताओंका एक करोड़ बत्तियां एकत्रित करनेका विचार हुआ था। लेकिन श्रीगंगाजीकी प्रेरणा व महात्माओंके आशीर्वादसे करीब डेढ़ करोड़से भी अधिक संख्यामें अर्थात् करीब ४०० डब्बा घीकी भीगी हुई बत्तियां एकत्रित हुई थीं। चैत्रकी पूर्णमासीके बाद कुछ बची हुई बत्तियां हरकी पैड़ी, दक्षेश्वर श्रवणनाथकी हवेली, पतितपावनेश्वर आदि मन्दिरोंमें बांट दी गई थीं।

(जय गंगे)

ॐ नमः शिवाय बैंक (मन्त्र कोष) में जगत कल्याणार्थ

कुम्भ में कार्यक्रम

ब्रह्मनिष्ट श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी जयेन्द्रपुरीजी महाराज महामण्डलेश्वर जी की उपस्थितिमें लोक हितार्थ चैत्र कृष्ण एकादशी रविवार ता० २७ मार्चसे चैत्र कृष्ण अमावास्या गुरुवार ता० ३१ मार्च तक "महारुद्र यज्ञ" हुवा। यज्ञके आरम्भमें अग्नि मन्त्रों द्वारा अरणी काष्ठसे मंथनकर प्रगट की गई थी, नवमी को प्रायश्चित्त स्नान दशमी को पंचांग पूजन मण्डप प्रवेश ब्राह्मण वर्णी आदि कार्य हुए। अमावास्याको पूर्णाहुतिके पश्चात ११ हजार बत्तीसे श्री यज्ञ नारायण भगवान की आरती की गई। पश्चात् प्रतिदिन होने वाली श्री शंकरजी तथा महामण्डलेश्वर जी की पुष्पांजली महिम्न पाठके अनन्तर "बसन्त पूजन" अर्थात् चारों वेदोंका पाठ हुवा। यज्ञके साथ २ प्रतिदिन ॐ नमः शिवाय आदि लिखे हुए मन्त्रोंका विराट पूजन व पुराणों का पाठ भी हुवा करता था। चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे घट स्थापन दुर्गापाठ द्वितीयासे श्री मद्भागवतकी सप्ताह प्रारम्भ हुई। चैत्र शुक्ल चतुर्थी सोमवारको लघुरुद्र मन्त्रोंका विराट पूजन तथा सहस्र घटाभिषेक [अर्थात् एक हजार घड़ोंसे श्री शंकरजी का अभिषेक] कर ११ हजार बेल पत्र शिवार्पण कर विराट आरती की गई।

ॐ नमः शिवाय बैंककी शाखा वालोंने अपनी तरफसे निम्नलि-

खित संख्यामें बत्तियां बनवाकर भेजनेकी कृपा की थी।

बत्तियोंका पारसल तथा संख्या

[१] ६५ लाख ३५ हजार लम्बी बत्ती २ पेटी भर कर, अर्थात ३४ कनस्तर आड़ी बत्ती (मारफत श्री योगीराज श्री बालुकी ब्रह्मचारी जी महाराज का। मु० नैपाल।

[२] २१ लाख फूल बत्ती ८२ कनस्तर तथा फुटकर मारफत पूज्य श्री १०८ स्वामी कृष्णानन्दजी महाराज ठि० संन्यास आश्रम एलिस ब्रिज अहमदाबाद।

[३] १९ लाख फूलबत्ती ६५ कनस्तर कुछ फुटकर बत्तियां C/o पूज्य श्री १०८ श्री स्वामी महेश्वरानन्दजी महाराज तथा श्रीमान् रामगोपाल जी अनन्तराम की धर्मशाला कानपुर।

[४] करीव १९०७०९५ बत्ती लम्बी (आड़ी) २० टीन तथा १५ लाख लिखित ॐ नमः शिवाय आदि मन्त्र सेठ अम्बालाल बापालाल महादेवीया सूरत।

[५] १५ कनस्तर फूल बत्ती करीब २॥ लाख श्री स्वामी विद्यानन्दजी महाराज ठि० ज्ञानेश्वर मठ मु० माटुंगा बम्बई।

[६] १ लाख ३० हजार मु० मैसूर श्री १०८ स्वामी शंकरानन्द जी भारती गीता प्रचारणी सभा।

[७] १ लाख १२ हजार मु० दक्षिण हैदराबाद श्रीमती मुन्नीबाई जी C/o लल्लूराम स्वरूप चार कमान ८०००० स्वामी वासुदेवानन्दजी करांची ४८००० स्वामी प्रकाशानन्दजी होशियार-

पुर ५०००० स्वामी त्रिवेणीपुरीजी खन्ना, ३५००० स्वामी माधवानन्दजी बम्बई, ३८२०० सनातनधर्म सभा मुजफ्फरनगर, २५००० काशी ३०००० आनन्द कुवर बाई नीमाज (उदयपुर) ४५३६५ कुन्दनलाल जी मुजफ्फरनगर १५००० बढवाण शाखा १०००० मु० राजकोट ७७३५ मु० गोधरा, ६०००० मैसूर होर्स ३०००० सानन्द स्टेट हीरावासाहेब ५३५०० मु० भादरण ९००० नीमाज स्टेट ३००० कलकत्ता ६००४ जयपुर २५००० भावनगर १२५००० मंत्र ५३००० रतलाम खण्डवा ६००० चूडास्टेट ६३८४ उज्जैन ११५०० पूना ६७२५ जि० बस्ती ११२००० दक्षिण हैदराबाद १०००० जामनगर इत्यादि ।

खरांगणासे भीमराज तथा कन्हैयालाल जी सवालाख बत्ती ४० हजार बम्बई स्वामी विद्यानन्दजी माटुंगा दोबारा १५ कनस्तर १२०००० तथा १ कनस्तर घी ।

ॐ नमः शिवाय

प्रथमवार ७१६२ दोवारा २५००० मु० वेरावल शाखा नं० २१७ बालकृष्ण छेलशंकर माकड़-बेंगलोर विठ्ठलाश्रमसे १२५०००। बस्ती मोहनलाल गुप्ता १५००० बस्तीसे दोवारा १डब्बा, सावर गांव मग्धी बाई२५००० द्वारकाधाम डाक्टर के०सी०२२०० काठियावाड़ नड़ीआद संतराम मन्दिर डायाभाई द्वारा ७०२९० करांची सत्संग सभा मीठादर C/o स्वामी कृष्णानन्दजी ३०००,हरजीवन गोकुल जी जोशी रणछोडलैन २५००० मु० साठखाखरा पो० पालिताना

स्टेट काठियावाड़ ७००० बती नाना बा० C/o देवीसिंह गगुभा मु० अमरोहा भागीरथी देवी C/o ब्रजनन्दन प्रसाद ३१००० धारस्टेट मुन्नालाल फूलचन्द चौधरी धानमंडी ११३००, मु० वेलौन रोशन सिंह रईस जि० बुलन्दशहर १४०००, मु० बीकानेर सेठ फकीरचन्दधनजी अनाजके व्यापारी काठियावाड़ ७५ ० मु० जूनागढ़ गिरनार जटाशंकरी ब्र० रामानन्दजी ७००० मु० लाहोर रायसाहेब मोहनलालजी मातारूप कोर मोहनलाल रोड़ १०५००० स्वामी श्री नृसिंहगिरी जी महाराज मण्डलेश्वर जीके यहां मु० राजकोट उद्धवजी सिवजी धर्मेन्द्र रोड़ २०००० बत्ती, भगवानजी वेचर २१०००, मु० मुजफ्फरनगर–पालीरामकी धर्मपत्नी नईमण्डी ११०००, मु० देहली छीपीवाड़ा मिश्री वीवी C/o किशननारायण जी २०००, दक्षिण हैद्रावाद चारकमान सेठ हरनारायण दास मनोहरलाल २००००, शे गांव (वराड़) बलदेवदास लक्ष्मीनारायण चतुरभुज खेतान २२००० मु० अमरावती चन्द्रभान गन्धे C/o पं० सदाशिव अम्बालाल देवरणकर सराफ १ पीपा करीब ३०००, मु० ध्रांग्धा श्रीमती श्री रमण वा साहेब मानविलास दो कनस्तर करीब २००००, मु० विमोरा पो० गणोद स्टेशन उपलेटा काठियावाड़ घनश्याम त्रिभुवन ज्योतिषी १ डब्बा २००० अनुमान और भी ६ लाखके करीब फुटकर बत्तियां आईं।

विशेष धन्यवाद

हरिद्वारके कुम्भमें ॐ नमः शिवाय बैंक की तरफसे हरकी

पैडी पर डेढ़ महीना पर्यन्त करीब डेढ़ करोड़ बत्तीसे श्री गंगाजी की विराट आरती की गई थी, जिसमें धार्मिक भावसे गंगा प्रीत्यर्थ देश देशान्तरोंसे भक्त जनोंने अपनी २ रुचि अनुसार बत्तियां बनाकर भेजी थी। फूल वत्तो आड़ी बत्ती सभी सम्मिलित थी। सबसे विशेष संख्यामें नैपालसे ६५ लाख ३५ हजार बत्ती श्री योगीराज श्री १०८ वासुकी ब्रह्मचारीजी महाराजकी मारफत आई थी। आपकी मारफत शिवार्पण बुद्धिसे उत्तम वर्णोंके हाथसे लिखा हुवा ॐ नमः शिवाय-व-पंचाक्षरी मंत्र भी करीब पांच करोड़ जमा हुआ है। अतः नैपाल सरकार तथा उनकी धार्मिक प्रजा व योगीराज श्री १०८ वासुकी ब्रह्मचारीजी महाराजको हार्दिक धन्यवाद है श्री विश्वनाथजी आपलोगों की भक्ति-ज्ञान-वैराग्य की वृद्धि करे।

बत्तियों की दुकान खुली

कानपुरमें ब्रह्मनिष्ठ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी महेश्वरानन्दजी मण्डलेश्वर महाराज का जब उपनिषद् की कथा पर प्रवचन चलता था कई सहस्र श्रोतागण कथा प्रेमी पधार कर प्रतिदिन सत्संगका अलभ्य लाभ लेते थे, एक दिन प्रसंगवश पूज्य श्री स्वामीजी महाराजने हरिद्वार कुम्भकी महिमा वर्णन करी और बादमें गंगाजी की आरती करनेका-व-बत्ती अर्पण करनेका महत्त्व बतलाया। फिर क्या था उसके दूसरे दिन सेबहुतसे लोग अपनी २ तरफ से घी में भींगी हुई फूल बत्तियां

ला लाकर एकत्रित करने लगे। धर्म प्रेमी परोपकारी श्री राम गोपालजीने भी प्रचार करना आरम्भ किया। विशेष बत्तियोंका प्रचार होता हुवा देखकर कई लोगोंने बत्तियों की दुकानही खोल दी जिससे बत्ती जमा करने वालोंको सुगमता रहे। इसप्रकार कानपुरसे पूज्यपाद श्री स्वामी महेश्वरानन्दजी महाराज मण्डलेश्वरजी की एक दिनकी प्रेरणासे ६५ कनस्तर बत्ती तथा कुछ फुटकर बत्तियोंका पारसल हरिद्वार पहुंचा था।

सूरतमें बत्तियोंका विराट प्रचार

धर्म प्रेमी, परोपकारी, प्रजा हितैषी, श्रीमान् सेठअम्बालाल बापालाल जी महादेवीयाजीने जब सुना कि गंगाजी की आरतीके लिये बहुत सी ॐ नमः शिवाय बैंक की शाखाओंमें बत्तियां बनाना शुरू होगया है। तो आपने भी प्रजा हितार्थ नोटिस छपवाया कि हरिद्वार कुम्भ पुण्य क्षेत्रमें श्री गंगाजी की विशाल आरती की जायगी अतः धर्मप्रेमी सज्जनोंको यथा शक्ति बत्तियां शाखामें जमा करवाना चाहिये इत्यादि। आपकी प्रेरणासे तीन बार बत्तियोंका पारसल हरिद्वार आया। बत्ती १९००७६५ अर्थात् २० कनस्तर लम्बी बत्ती थी। १५ लाख ॐ नमः शिवाय आदि मंत्र भी भिजवाया था।

हरकी पैड़ी पर आरती का समारोह।

यद्यपि वहां प्रथम से ही गंगा सभा की तरफ से प्रति दिन

आरती हुवा ही करती है। ॐ नमः शिवाय वेंक का भीवोर्ड आरती करने का लगाया गया था। इस कारण इस विचित्र अपूर्व आरतिके देखनेके लिये पैड़ी पर चारों तरफ ठसाठस नर नारियों की भीड़ लग जाती थी। इस आरतीमें पैसा चढ़ाना मना था, किसीने भी भूलसे पैसा चढ़ाया, उसी समय पैसा आदि गंगाजी में फेंक दिया जाता था या अन्य मन्दिरोंमें चढ़ा दिया जाता था, प्रथम सविधि गंगाजी को दूध अर्पणकर पूजनादि करनेके पश्चात् वेदपाठ घण्टा नादध्वनि कर पत्तों के दोनों (पड़या) में बत्तियां जलाकर हजारों दोने बहाये जाते थे। बाद गंगामें तैरने वाली छोटी छोटी नौकायें जली हुई बत्तियोंसे भरकर छोड़ी जाती थी। इसका दृश्य बड़ाही अपूर्व दृष्टिगोचर होता था। बहुतसे प्रेमी भक्त प्रेमके वशीभूत होकर इन नौकाओं को पकड़कर मन्दिरकी परिक्रमा कराकर लोगोंको रिझाते थे।

दैविक चमत्कार

श्रीगंगाजी ने बत्तियों का डिब्बा मंगाया।

बत्तियोंका स्टाक दो जगह रहता था एक सूरत गिरीजीके बंगलेमें तथा एक हरकी पैड़ी पर गंगा सभाके दफ्तरमें। एक दिन अकस्मात हरकी पैडीका स्टाक समाप्त होजाने पर ब्रह्मचारी लक्ष्मणानन्दजी स्टाकमें रखनेके लिये बंगलेसे ३६ कनस्तर घी की बत्तियोंसे भरे हुए ठेलेमें धरवाकर लेगये। पोस्ट आफिसके सामने

मेले की बहुत भीड़ होनेके कारण ठेला, मोटर, इका कुछ नहीं जा सकता था, कुली लोग भी दुगना चौगुना दाम मांगते थे। अतः ब्रह्मचारीजीने हैरान होकर उन ३६ कनस्तरोंको सड़क परही पड़े रहने दिया। और कहा कि कल देखा जायगा। भक्त हित-कारी श्री गंगामाताने न जाने कब और किस समय किसके द्वारा ३६ बत्तियोंके भरे हुए कनस्तरोंको ठीक स्टाकमें पहुंचा दिया। दूसरे दिन ब्र० लक्ष्मणानन्दजीने जाकर देखा तो सड़कके ऊपर एक भी कनस्तर नहीं है। पुलिस चौकीमें तथा थानेमें इत्यादि सब जगह तलाश किया गया। कहीं पर भी पता नहीं लगा। अन्तमें हरकीपैड़ीपर निराश होकर गये तो देखा सब कनस्तर स्टाकमें रखे हुए हैं। वहांके लोगोसे पूछने पर पता लगा। गंगा सभाके आदमी कहने लगे महाराज आप जैसा कोई साधु १२ बजे रात्रिमें सब कनस्तर रख गया है। हमको और कुछ मालूम नहीं। ऐसा चमत्कार देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुवा, गंगा माताकी लीला अपरम्पार है।

॥ अपूर्व मंदिर ॥

यह मन्दिर गत्ते तथा बांसोंका बना हुआ था। और चारों तरफसे सुनहरे कागजोंसे मढ़ा हुआ, शिखर ध्वजा त्रिशूलसे सुशोभित ॐ गंगायैनमः जय गंगे, नमः शिवाय। श्री। आदि शब्दोंसे अंकित मन्दिरके अन्दर मन्दिर जिसके बीचमें कई प्रज्वलित बत्तियां रखी जाती थी। इसकी रक्षाके लिये एक आदमीइसके साथ रहता था, जिससे मन्दिरके ऊपर कोई पानी न छोड़ देवे।

जिस समय यह मन्दिर गंगाजीमें छोड़ा जाता था चारों तरफसे जय गंगे-जय भागीरथी आदि करतल शब्द ध्वनिही सुननेमें आती थी। लोग कहते थे, कि ऐसा मन्दिर बनाकर गंगाजीमें ज्योति आज तक किसीने अर्पण नहीं की। इस मन्दिरको चार आदमी उठाते थे। इसकी बनावट सजावटके लिये ब्रह्मचारी लक्ष्मणानन्द जी को हार्दिक धन्यवाद है।

॥ दो बड़े दीपस्तम्भ ॥

श्रीमान् श्री ब्रह्मचारी लक्ष्मणानन्दजी महाराजके उत्साह-व-उद्योगसे ये दीपस्तम्भ बनाये गये थे। लोहे की तिपाई सरीखे जिसमें करीब ढाई सौ दीपक धरे हुए, ऊपर छोटी थाली बत्तियां लगनेसे बड़ी शोभा को प्राप्त होती थी, दीपस्तम्भोंमें कभी २ फूल बत्ती-व कभी २ आड़ी-लम्बी बत्ती भी जलाई जाती थी। नैपाल की बत्तियां इस दीपस्तम्भमें एक एकमें दो दो लाख एक साथ जल जाती थी सब बत्तीके जल जानेपर ऐसा अपूर्व दृश्य दृष्टिगोचर होता था। मानो साक्षात् यज्ञनारायण भगवान अथवा हुताशनी देवीही विराज मान हैं। प्रदीप्त ज्वालाको बढी हुई देखकर दर्शक: लोग करतल ध्वनिकर जय गंगे जय गंगे आदि शब्दोंका प्रयोग बड़े मधुर स्वरसे करते थे।

॥ १०८ बत्ती की एक विशाल आरति ॥

ये आरति जर्मन सिलवरकी श्रीमान् परोपकारी श्री बीरुभाई जी की तरफसे अर्पण की हुई। सबसे अन्तमें इसी आरतीसे

पूर्णाहुति की जाती थी। आरतिमें वजन विशेष होनेके कारण और अग्निकी प्रदीप्त ज्वालाके भयसे हाथमें उठाकर आरति करना बड़ा मुश्किल पड़ता था। लेकिन ब्रह्मचारी लक्ष्मणानन्दजी महाराज बड़े उत्साह-व-साहसके साथ हाथमें उठाकर प्रदीप्त ज्वालाकी लपट को सहन करते हुए चारों ओर घुमाते थे। इस अद्भुत कार्य को अवलोकन कर दर्शकगण जय गंगे जय गंगे-की ध्वनि मधुर स्वरसे एक साथ उच्चारण करते थे।

ब्रह्मचारियों का कार्य।

डेढ़ महीना तक प्रतिदिन बड़े उत्साहसे सायंकालको आरति से पूर्व श्री ब्रह्मचारी लक्ष्मणानन्दजी महाराज—श्रीब्रह्मचारी शिव चैतन्यजी तथा ब्रह्मचारी रामानन्दजी—व धर्मदत्तजी-आदि पधार कर सेवा कार्य करते थे। ब्रह्मचारी रामानन्दजी की निगरानीमें २३ आदमी वत्तियोंकी व्यवस्था करते थे। इन्हीं २३ आदमियोंमें वेदपाठी भी सम्मिलित थे। जिनका काम आरति की समाप्ति तक वेदपाठ करनेका था। श्रीमान् सेठ रतनलालजी की तरफसे इसका प्रबन्ध था। उपरोक्त २३ आदमियोंको ब्र० रामानन्दजी प्रति सप्ताह तनखाह देकर सन्तुष्ट करते थे। पं० देवीदत्तजी का कार्य अत्यन्त सराहनीय रहा। प्रतिदिन पांच कनस्तर कभी छः सात कनस्तर भरे हुए बत्तियां जलाई जाती थी।

ब्र० शिवचैतन्यजी की कीर्तन ध्वनि।

ॐ नमः शिवाय बेंकके तथा विश्वनाथ पत्रके प्रचारक ब्र०

शिवचैतन्यजी गंगापूजन–व, वेदपाठके अनन्तर गंगाजी की आरति के मध्यमें प्रतिदिन हजारों नर-नारियोंके बीचमें खड़े होकर करत लध्वनि व झांजनादके द्वारा निःस्वार्थ भावसे अपूर्वही कीर्तन कराते थे। गंगाजी की आरति व गंगाजी सम्बन्धी भजन-मातायें लोग भी बड़े मधुर स्वरसे उचारण करती थी, आपके कीर्तनको श्रवण-कर सबलोग मुग्ध होजाते थे, और पुनः पुनः कीर्तनके लिये प्रार्थना करते थे।

आरति की पूर्णाहुति।

यह विशाल आरती हर की पैड़ी पर ब्रह्माजी का मन्दिर और शंकरजी के मन्दिरके मध्य स्थलमें की जाती थी-गंगा सभा की तरफसे प्रतिदिन एक स्वयं-सेवक तथा महानन्द मिशन के चार स्वयं-सेवक व सर्कारी दो पुलिस तथा कुछ स्वयं सेवक मातायें भी सेवामें इन्तिजामके लिये उपस्थित होती थीं। चैत्र शुक्ल पूर्णिमासीको बड़े समारोह से पूर्णाहुति की गई। दूसरे दिन ब्राह्मण भोजन आदि कार्य हरकी पैड़ीपर गंगा सभाके दफतरमें गंगा सभाके मन्त्री महोदय की उपस्थितिमें बढ़े समारोहके साथ हुवा—

शेष-बत्तियां बांटी गई।

कार्य-कर्ताओं का एक करोड़ बत्ती एकत्रित करनेका विचार हुवा था लेकिन श्रीगंगा माताकी कृपासे एक करोड़ बत्तीकी जगह करीब डेढ़ करोड़ बत्तियां एकत्रित होगई थीं, कभी ४ कभी ५

कभी ७ कनस्तर भरे हुए बत्तियोंसे गंगाजी की आरती की जाती थी। फाल्गुण शुक्लमें गंगा सभाकी आरतीमें तथा अन्य दूसरी आरतियोंमें-व मन्दिरोंमें कनस्तर बांटे गये। पूर्णाहुतिके पश्चात् दक्षेश्वर-पतित पावन-श्रवणनाथ की हवेली-आदि स्थानोंमें दो दो कनस्तर देकर बाद हरकी पैड़ीपर प्रत्येक मन्दिरोंमें एक-एक दो-दो कनस्तर बांटे गये। इस प्रकार ३६ कनस्तर तथा एक बड़ा थैला बत्तियोंका भरा हुवा बांटा गया। और भी जिन २ सज्जनोंने आरतीके लिए बत्तियां मांगी सबको दिया गया।

बंगलेमें सत्संग।

श्रीस्वामी सूरतगिरीजी महाराजके बंगलेमें लोकहितार्थ अनेक लघुरुद्र प्रतिदिन वेदपाठ, हवन, सहस्रघटा भिषेक, बसन्त पूजन भागवत सप्ताह आदि धार्मिककार्य होते रहे, साथ ही साथ सायंकाल को ब्रह्मनिष्ठ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी महेश्वरानन्दजी महाराज मण्डलेश्वरजी वेदान्तकी कथामृतका पान कराते थे। और सबेरेके समयमें कतिपय विद्वान् महात्माओंको भी आपही अध्ययन कराते थे। महात्माओं को शास्त्र पढ़ानेमें तथा शास्त्रीय प्रवचनमें आपका बहुत अनुराग रहता है।

संन्यासी संस्कृत पाठशाला।

ब्रह्मनिष्ठ श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी नृसिंहगिरीजी महाराज मण्डलेश्वरजी के सभापतित्व में बड़ी धूम धामसे श्री काशीस्थ संन्यासी संस्कृत पाठशाला का वार्षिको-

त्सव मनाया गया, उत्सवमें मण्डलेश्वर तथा प्रतिष्ठित महन्त जसदण स्टेट की राजमाता श्रीमती कमरी मां जी साहेब तथा सानन्द स्टेटकी श्रीमती राजमाता हीरा वा साहेब आदि सद्गृहस्थ उपस्थित थे। पाठशालाके उत्सवके दूसरे दिनही ॐ नमः शिवाय बेंक तथा विश्वनाथपत्र का वार्षिकोत्सव रखा गया था, लेकिन शंकरेच्छा गरीयसी उसी दिन जसदण स्टेटकी राजमाता श्रीकमरी मां साहेब का कैलास वास होजाने के कारण उत्सव बन्द रखा गया।

समष्टि भण्डारा महोत्सव।

यद्यपि पूज्यपाद श्री १०८ स्वामी जयेन्द्रपुरीजी महाराज महा मण्डलेश्वरजी के अन्नक्षेत्रमें करीब हजार बारह सौ मूर्ति के लिये प्रतिदिन भोजन बनता था। बाहरके भी कितने अभ्यागत महात्मा आकर भिक्षा करते थे। लेकिन जितनी समष्ठि इस साल बंगले में हुई-इतनी समष्टि अन्य किसी स्थानमें नहीं हुई। परमहंस महा-त्मा-तथा ब्रह्मचारी वर्ग-ब्राह्मण पंडित वर्ग जितने यहां रहे, उतने किसी अन्य स्थानमें नहीं रहे।

प्रथम समष्टि श्रीस्वामी वसन्तानन्दजी की मारफत नीमाज स्टेट की राजमाताकी तरफ से (२) बंगले के श्री १०८ महन्तजी महा-राज (३) श्री १०८ श्रीस्वामी महेश्वरानन्दजी महाराज मण्ड-लेश्वर, श्रीमान् श्रीवीरू भाई जी (४) श्री १०८ महन्त स्वामी माधवानन्दजी महाराज बम्बई। (५) श्री १०८ श्रीमहन्त विभूति पुरीजी महाराज पुष्कर (६) श्रीमान् सेठ कानूभाईजी अहमदा-

बाद (७) श्रीमान् सेठ डाया भाईजी कलोल अहमदाबाद ।

काशीमें महोत्सव ।

महाशिवरात्री के दिन ॐ नमः शिवाय वेंकमें श्रीब्रह्मचारी योगानन्दजी महाराजकी उपस्थितिमें बड़ी धूमधाम से मन्त्रों का विराट पूजन, अभिषेक, वेदपाठ, विशेष आरति परिक्रमा आदि कार्य हुआ । श्रीमान् स्वामी गोपालानन्दजी शिवपुराण की कथा श्रवण कराते थे । इस साल उक्त ब्रह्मचारीजी ने ही काशीवास कर वेंक का सब काम संभाला । और विधिवत् प्रतिदिन मंत्रोंका पूजन आरति व्यवस्था बड़े प्रेम से करते रहे ।

ॐ नमः शिवाय वेंकके स्वयंसेवक ।

ॐ नमः शिवाय वेंकके ५० पट्टे तथा श्रीगंगाजी की आरति के १६ पट्टे २० बिल्ले दो अलफी तथा २५ ध्वजा आदि प्रचारके लिये बनाये गये थे । ॐ नमः शिवाय वेंकके कार्यकर्त्ता स्वयं-सेवक हरकी पैड़ीपर आरती के समय-समष्टि की पंक्तिमें परोसते समय जलूसके समय-उत्सव आदिमें सभी जगह जाकर सेवाका लाभ लेते थे ।

ॐ नमःशिवाय वेंकका मासिक पत्र ।

ॐ नमः शिवाय वेंक से तीन साल से एक मासिक पत्र निकलता है । जिसमें बड़े बड़े प्रतिष्ठित विद्वान् महात्माओंके भक्ति-ज्ञान-वैराग्य सम्बन्धी धार्मिक लेख रहते हैं । ५ फर्मा हिन्दी का १ फर्मा गुजराती विभाग का भी रहता है, हिंदी का २) गुजराती

विभाग का २॥) रुपैया है, कुम्भ में विश्वनाथपत्र कार्यालय-व विश्वनाथपत्र औषधालय भी खोला गया था।

विश्वनाथ आश्रम और शतकोटि मन्त्रेश्वर महादेवका मंदिर

काशीमें पंचक्रोशीके अन्दर एक सुन्दर विशाल आम्र आदि वृक्षोंसे सुशोभित "शतकोटि मन्त्रेश्वर विश्वनाथ महादेवका मंदिर बनानेके लिये तथा महात्माओंके निवासार्थ एकांत शांत बगीचा लिया गया है। पूज्यपाद आचार्य प्रवर श्री १०८ स्वामी जयेन्द्रपुरीजी महाराज मण्डलेश्वर जी ने इसका "विश्वनाथ आश्रम" नाम रखा है मंदिर बनानेके लिये ईंटें बनाई जा रही हैं और पत्थर का विचार हो रहा है। मंदिर का नकशा तैयार होगया है। इस आश्रममें दो सुन्दर स्वादु शीतल जलके कूप हैं। बगीचेमें प्रथमसे छोटे दो और शंकरजी के मंदिर बने हुए हैं-इन दो मंदिरों का भी जीर्णोद्धार किया जायगा, इत्यादि इस पवित्र कार्य करनेके लिये श्री स्वामीजी महाराज काशीमें निवास कर रहे हैं।

पता—विश्वनाथ आश्रम—

ठि० चुप्पेपुर (शिवपुर रोड) बनारस कैण्ट,

मन्त्र लिखने वालों को इनाम

हरिद्वारके कुम्भमें ॐ नमः शिवाय बैंक की तरफसे उत्साह वृद्धत्यर्थ विशेष संख्यामें मन्त्र लिखने वाले सज्जनों को बम्बईके धर्मप्रेमी परोपकारी श्रीमान् सेठ जमुनादास हरख जी संघवीजी

की पुत्री श्रीमती निर्मला बाईकी तरफसे पारितोषिक (इनाम) दिया गया प्रथम इनाम लाहौरके श्रीमान् देवीदास जी स्टाम फरोस को भेजा गया आपने ५० चित्र बहुत सुन्दर ड्राइंगके कागज पर हाथसे बनाये हुए शंकर, पार्वती, गणेश, नन्दीगण, हनुमानजी आदि देवताओंके भेजे थे। इन चित्रोंमें विशेषता यह थी कि सभी चित्रोंमें ॐ नमः शिवाय मन्त्र भरा हुआ साफ अक्षरोंमें लिखा हुआ था। अतः इनको एक स्वर्ण पदक (सोनेका तकमा) तथा एक स्वर्णके तारमें मढ़ी हुई रुद्राक्ष की माला इनाममें दिया गया। नडीआदमें श्रीमती शान्ता बैनने निज हाथोंसे ही लिखकर १० लाख पञ्चाक्षरी मन्त्र जमा किया है। इनको एक रजत पदक (चांदीका तकमा) दिया गया।

ब्रह्मचारी शिव चैतन्यजीने दक्षिण आदि प्रान्तोंमें जाकर शिवार्पण बुद्धिसे द्विजातियोंमें विशाल प्रचार कर कई करोड़ोंकी संख्यामें मन्त्र लिखवाकर भिजवाया है। इनको शंकरजीके भजन के लिये एक स्वर्णके तारमें मढ़ी हुई रुद्राक्षकी माला इनाममें दी गई।

नोट—कागजके ऊपर रक्त चन्दन अथवा कुंकुम आदिसे अपनी २ इच्छानुसार शिव-शिव राम-राम लिखकर कैंचीसे अलग २ कर गोली बनानी चाहिये—जो भाई मन्त्र लिखना नहीं जानते हों, वे मन्त्र बोलकर गोली बनावें।

आगामी प्रयागराजके कुम्भमें क्या होगा ?

ॐ नमः शिवाय बैंक की तरफसे आगामी प्रयागराजके कुम्भमें जगत कल्याणार्थ सवा करोड़ आटे की गोलियां जिसमें शिव शिव व राम राम लिखा रहेगा। त्रिवेणीके संगममें मछलियों को खिलाई जायगी। गोली छोड़नेके साथ २ गंगा पूजन व शंकर जी का अभिषेक वेद पाठ लघुरुद्र हवनात्मक तथा लिखित मन्त्रों का पूजन व गंगाजी की आरति हुवा करेगी मकरमें तिल दानका महत्व है अतः तिलके लड्डुओं की हवनमें आहुति दी जायगी।

धन्यवाद !

ॐ नमः शिवाय बैंकके सहायक तथा यज्ञप्रेमी अहमदाबाद निवासी श्रीमान् धर्मवीर वीरूभाई डायाभाईजी महेताको धन्यवाद है। जिन्होंने मुक्तिक्षेत्र काशीमें भी तथा प्रयाग त्रिवेणीके पुनीत (पवित्र) तट पर हरद्वारके कुम्भमें भी यज्ञादि अनेक प्रकारकी सेवाका अलभ्य लाभ लिया था। सेठ रमणलालजीने वस्त्रादिकी सेवा। तथा मद्रास निवासी सेठ गौरीशंकरजी वागड़ीने ॐकारादि चित्रोंकी सेवा। सेठ राधा कृष्णजी मूंदड़ा तथा सेठ देवीदासजी स्टाम फ्रोस लाहोर निवासीने ॐ नमः शिवायके चित्रोंकी सेवा-व कतिपय प्रेमी भक्त जनोंने हवनात्मक लघुरुद्रादिक कराकर सेवा का अलभ्य लाभ लिया था।

ॐ नमः शिवाय बैंकके प्रधान प्रचारक ब्रह्मचारी शिव चैतन्यजी को हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने दक्षिण प्रान्तमें भ्रमण

कर अपरिचित स्थानोंमें जाकर उत्तम वर्णोंमें ॐ नमः शिवाय मंत्र तथा ॐ नमो नारायण मन्त्र व राम राम मन्त्र का प्रचारकर कई करोड़ोंकी संख्यामें मन्त्र लिखवाकर साथही साथ अनेक प्रकारके चित्रादिकों को छपाकर बैंकमें अर्पण किये हैं।

सूरतकी शाखाके कार्यकर्ता सेठ अम्बालाल बापालालजी महादेवीया। तथा बम्बई शाखाके कार्यकर्ता सेठ जमुनादस हरखजी संघवी इन दोनों सज्जनोंकी प्रेरणासे सब शाखाओं की अपेक्षा से विशेष संख्यामें मन्त्र लिखकर आये हैं। अतः उक्त सज्जनों को काशीस्थ ॐ नमः शिवाय बैंक की तरफसे धन्यवाद है।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्री पूज्यपाद स्वामीजी ने, एक बैंक निराली खोली है।
जिसमें हरिहर भक्तों की हरदम-रहै पहुंचती टोली है ॥
जो, नमः शिवाय, मन्त्र लिखकर, भक्तों इस जगह पठाता है ।
जगमें यश-सुख अति पाता हैं, तन त्याग मुक्त होजाता है ॥
इससे प्यारे धर्माभिमानियों ? मन्त्र लिखो और लिखवाओ।
बण्डल के बण्डल बांध बांध, प्रतिमास बैंक में पहुंचाओ ॥
भारत का शहर-ग्राम-कस्बा, घर एक न ऐसा खाली हो।
यह महामन्त्र जिसने लिखकर, अपनी इक लिस्ट न डाली हो ॥
जो फल कर्ता को होता है, प्रेरक संयोजक पाता है।
यह है कल्पना नहीं केवल, यह वेद शास्त्र बतलाता है ॥
बैकुंठ गये थे अवध निवासी, जो प्रभु भक्त कहाये थे।
नर जीवनके उन लोगोंने, बन्धुओ ? अमित फल पाये थे ॥
तुम भी उमेश का महामन्त्र लिखकर यदि जमा करा लोगे ॥
जीवन में चैन उड़ा लोगे, मरने पर मुक्ति कमा लोगे ॥

इतना लिखकर लेखनी, लेती है विश्राम।
हो, धर्मदत्तकी कामना-पूर्ण शंभु सुखधाम ॥

मुद्रक—धन्नूलाल खत्री,
काशी विश्वनाथ प्रेस, ढुण्ढीराज गणेश, बनारस सिटी ।